बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
प्रयोगवाद

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कालेज डुमराँव
बक्सर-(बिहार)

प्रयोगवाद :-

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी का महत्वपूर्ण काव्यांदोलन 'प्रयोगवाद' का आरम्भ अज्ञेय के संपादकत्व में निकलने वाले काव्य संग्रह 'तारसप्तक' से हुआ। 'तारसप्तक' में विविध विचारधाराओं के कवि एक साथ एकत्रित हुए जिनमें अज्ञेय को छोड़कर ज्यादा तर कवि प्रगतिशील विचारधारा के समर्थक थे। प्रयोगवाद नाम इस काव्य-प्रवृत्ति के विरोधियों द्वारा दिया गया है। प्रयोगवाद के कवियों ने प्रगतिवाद पर दो आरोप साफ तौर पर लगाये- पहला, प्रगतिवाद साहित्य का संकीर्णतावादी आंदोलन है जिसमें रचनाकार की स्वतंत्रता का अपहरण किया जाता है और दूसरा, प्रगतिवाद विषय-वस्तु पर अत्यधिक बल देकर विचारधारा की नारेबाजी का फार्मूला अपनाता है। इसमें साहित्य की कलात्मक और रूप-विधान की भयंकर उपेक्षा होती है।

अज्ञेय ने प्रगतिवाद से असंतुष्ट होकर व्यक्ति स्वातंत्र्य सिद्धांत की स्थापना का अभियान 'प्रयोगवाद' में चलाया। प्रगतिशील साहित्य में साहित्येतर मूल्यों को स्थान मिला था, किन्तु 'प्रयोगवाद' साहित्य मूल्यों को केन्द्र में रखकर आगे बढ़ा। फलतः प्रगतिवाद के अतिवाद से बचने के चक्कर में 'प्रयोगवादी' स्वयं अपने ही अंतर्विरोधों का शिकार होकर रूपवाद के जाल में फंसता गया, जिससे उसे मुक्ति नयी कविता आन्दोलन में मिली। इसी समय काव्य में 'प्रयोग' को आधार बनाकर एक आन्दोलन नकेनवादियों या प्रपद्यवादियों ने खड़ा कर दिया।

प्रयोगवाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने अपने एक निबंध 'प्रयोगवादी' रचनाएं में किया है। इस निबंध में मुख्यत: 'तारसप्तक' की समीक्षा की गयी है। उन्होंने लिखा है 'पिछले कुछ समय से ही हिन्दी काव्य क्षेत्र में कुछ रचनाएँ हो रही हैं जिन्हें किसी सुलभ शब्द के अभाव में प्रयोगवादी रचना कहा जा सकता है।

दूसरा सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने वाजपेयी जी का उत्तर देते हुए 'तारसप्तक' की रचनाओं को 'प्रयोगवादी' कहना स्वीकार नहीं किया है। पर तार-सप्तकीय कवियों के वक्तव्यों में 'प्रयोग' शब्द बार-बार प्रयुक्त हुआ है। ऐसी स्थिति में इस शब्द का चलन हो जाना स्वाभाविक था।

प्रयोगवाद का संबन्ध 'छायावाद' से भी जोड़ा जाता है। निराला के समस्त काव्य को प्रयोग का एलबम कहा जाता है। अपने एक निबन्ध तार-सप्तक प्रसंग में नेमिचंद्र जैन ने लिखा है, जिस बदलती हुई काव्य चेतना की एक अभिव्यक्ति तारसप्तक के कवियों में मिलती है वह उस दौर के अन्य बहुत से तरुण कवियों में थी जिनमें निराला के अतिरिक्त शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, भवानी प्रसाद मिश्र, राजेश्वर गुरु, केदारनाथ अग्रवाल और नरेन्द्र शर्मा तक का उल्लेख किया जाता है।

'प्रयोगवाद' के प्रवर्तन का श्रेय अज्ञेय को ही मिला। इस कविता के स्वरुप को जानने के लिए 'तारसप्तक' (1943) 'दूसरा सप्तक' (1951) और 'तीसरा सप्तक' (1959) को आधार बनाया जाता है।

अज्ञेय ने चौथा सप्तक भी निकाला पर इसे उपेक्षित कहकर नकार दिया गया। संपादक ने न केवल इक्कीस कवियों को एकत्र किया बल्कि हर कवि ने अपने काव्य पर वक्तव्य भी दिये। तारसप्तक में सात कवि हैं, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा, और सच्चिदानन्द हिरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय।

इस प्रकार अज्ञेय के द्वारा दिये गये सैद्धांतिक वक्तव्य ही प्रयोगवाद के विचार केन्द्र को आलोकित करते रहे। गिरिजाकुमार माथुर को छोड़कर तारसप्तक के सभी कवि साम्यवादी विचारधारा की ओर झुके रहे। मुक्तिबोध का पूंजीवादी समाज के प्रति, नेमिचंद्र जैन का कवि गाता है, भारत भूषण अग्रवाल का अपने कवि से एवं जागते रहो, प्रभाकर माचवे का निम्न-मध्यवर्ग और बीसवीं सदी, रामविलास शर्मा का विश्व शांति शीर्षक कविताओं का स्वर स्पष्ट रुप से साम्यवादी विचारों से प्रेरित है। इसलिए हिन्दी आलोचकों का एक वर्ग मानता है कि प्रयोगवाद का जन्म प्रगतिवाद की कोख से हुआ।

स्वयं डॉ. रामविलास शर्मा इसी मत की पुष्टि करते हैं। 'राही नहीं राहों के अन्वेषी' का नारा अज्ञेय ने सभी को सत्य से भटकने के लिए दिया था - ताकि वे आभिजात्यवादी, पूंजीवादी मूल्यों की रक्षा कर सकें। इतना ही नहीं व्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर अज्ञेय ने व्यक्तिवाद का पोषण किया और 'कला कला के लिए' सिद्धांत के बीज बोये।

वास्तविकता यह है कि प्रयोगवाद मानव जीवन के आंतरिक यथार्थ पर बल देने के कारण फ्रायड या युंग की स्थापनाओं की ओर भटक गया। प्रगतिवादी काव्य ने यदि शोषित एवं दलित के आक्रोश की अभिव्यक्ति दी तो 'प्रयोगवाद' ने आधुनिक शिक्षा से संपन्न युवकों की अनास्था, यंत्रणा और संदेह की मनोदशाओं को व्यक्त किया। इसलिए प्रयोगवाद मानव-मन की निजी समस्याओं चिंताओं का काव्य था। प्रयोगवाद का सकारात्मक पक्ष यह है कि इसने शिल्प और रूप विधान के क्षेत्र में अनेक नये प्रयोग किये। शिल्प पर ज्यादा बल देने के कारण ही प्रयोगवाद को रूपवादी कहा जाता है। नयी कविता ने प्रयोगवाद के इस रूपवादी मोह से विद्रोह किया है। इसी दृष्टि से प्रयोगवाद तथा नयी कविता एक दूसरे के पर्याय नहीं है। दोनों भिन्न दृष्टि के काव्य आन्दोलन हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रो प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)